# PATEL

मेरा नाम कल्याण सिंह पटेल है ।

Q- आप मुक्ति मोर्चा मे कैसे आये

Ans- मै पहले भलोटिया प्रा० लि० कम्पनी में काम करता था

Q- कहा पर है भलोटिया कम्पनी

Ans- यह उरला इन्डस्ट्रील एरिया में है

Q- वहाँ पर क्या काम करते थे ।

Ans- मै वहाँ फिनिसिंग का काम करता था प्लाईवुड के फिनिसिंग करता उसके बाद मे स्टम्पिग करता था तो फिर माल लोड होकर बाहर जाता था

Q- कितनी देर काम किया

Ans- वहाँ मैने तीन साल काम किया

Q- आप ठेके पर थे या रग्युलर थे

Ans- रगुलर था

Q- तनख्वा क्या थी आपकी

Ans- वहाँ संगठन से जुडने से पहले १६ रूपये रोजी था उसके बाद हम छत्तीसगढ धार्मिक संघ से जुडें तब जाकर हम लोगों का रेट हुआ ३४,३५,३६ रूपयें तीन बेसिक पर हुआ मेरा रेट तो वहाँ पर ३५ रूपये था और वहाँ पर महीन में दो बार वेतन मिलता था एक २२ तारीख और एक ७ तारीख को हर महीने १५-१५ दिन बाद पेमेन्ट मिलता था और पीस रेट भी पहले वहाँ काम होता था ठेके पर हालाकि हम लोग रगुलर थे लेकिन वह ठेका कर देते थे

कि आपकों ३५ पीस आज ८ घन्टें फिनिसिंग करना है तो फिर पीस रेट कर देते थे ।

Q- तो फिर क्या हुआ आप वहाँ से कैसे छोड कर आये ।

Ans- वहाँ पर कम्पनी तो ठीक चल रही थी

Q- मुक्ति मोर्चा का कहाँ से पता चला और यह कौन से साल की बात है

Ans- यह १९९४ की बात है तब तक मुक्ति मोर्चा मे काफी हो गये थे सिम्पलैक्स वाले बीसी वालें सब साथियों की मीटिंग होती थी तो हम लोगों को पता चला कि इस किस्म की यूनियन है फिर हम लोग मिटिंग वगैरा में जाते थे । एक बार हमारी सबसे बडी मीटिंग बदांरी मन्दिर में हुआ । वहाँ पर कम से कम ७०० श्रमिक थे । भलोटिया प्लाईवुड और भलोटिया वर्हीनर दो कम्पनी थी । बहुत बडी कम्पनी थी ।

Q- इधर Total वर्कर कितने थे ।

Ans- यहाँ पर ७०० थे

Q- तो सभी जुड गये थे

Ans- जी हाँ सब जुड गये थे । उसमें तो फिर हम जाते थे मीटिंग वगैरा में फिर हमें संगठन के विचार मालूम होते थे पहले सरोवा में उनका आफिस था यहाँ पर आफिस नही था तो वहाँ पर सब सिफट वाईज मीटिंग में जाते थे फिर कम्पनी चलते चलते अचानक पता नही क्या हुआ और तीन साल बाद बन्द हो गयी । संगठन की ताकत से हम लोगों को २० प्रतिशत बोनस मिलता था एक साल तक बन्द होने के हालात में भी हम लोगों को हर महीने पेमेन्ट व बोनस मिलता था सिर्फ हम लोग पेमेन्ट के लिए जाते थे

क्योकि वह कम्पनी अचानक बन्द कर दी गयी । बिना हम लोगों को सूचना किये हुए । अभी भी उन्होने शो नही किया कि बन्द कर दी है ।

Q- वहाँ से छोडने के बाद फिर क्या किया

Ans- वहाँ से छोडने के बाद इधर उधर काम करते ही रहते थे उसके बाद काम चल रहा है । तो ठीक है नही तो खाली बैठें रहते थें । फिर यहाँ अंसार जी ने बोला कि आप कुछ काम कीजिए यानि कि आफिस में बैठिए तो आफिस में बैठता था फिर उसके बाद टाईपिंग का काम करता था मैने पहले टाईपिग सीखी हुई थी तो उससे भी सगंठन में अपना योगदान देते रहे जब यहाँ शहीद नगर बसाया था १९९६ में यह जमीन पूरी सरकारी जमीन है तो हम लोग इस जमीन पर आकर के बैठने लगे तो मुखिया साथी लोग बोले कि आप कुछ काम कीजिए आपकों टाईपिंग आता है और फिर राइटिंग भी आपकी ठीक है तो आप लिखाने पढनें का कुछ काम कीजिए तो मै फिर रोज आ जाता था । सुबह ८ बजे खाना खा कर आ जाता था और फिर शाम को जाता था बीच में थोडा दिक्कत आया था बैठता था तो परिवार के लिए खाना कहाँ से आता फिर बात हुआ कि नही हम सगंठन की तरफ से उसकों करेगें । मेरा कुछ उधारी भी तो संगठन में ही वह उधारी चुकता करवाया । १०००-१५०० उधारी था मेरे साथ मेरे माँ बाप भी रहते थे इसलिए हमकों शुरू शुरू में दिक्कत होता था ।

Q- तो फैक्टरी से काम छोडना और उस तरह संगठन के साथ काम करना अजीव सा नही लगा

Ans- नही नही हम लोग लगातार मीटिंग वगैरा में रहते थे तो नियोगी जी के विचार वहाँ पर लोगों को बताते थे हमारा दुर्भाग्य है कि हम नियोगी जी दर्शन नही कर पाये । मैने नियोगी जी को नही देखा है तो साथी लोग बताते है जैसे हलधर जी, एस.के. सिह जी उन लोगों से बहुत ताकत मिलता था मै शुरू में बहुत डरपोक था । पुलिस आती थी तो मै बहुत डरता था ।

Q- १९९६ में तो नियोगी जी की हत्या हो चुकी थी और सिम्पलैक्स में जितने साथी लोगों ने विद्रोह किया था उन सब को नौकरी से बाहर निकाल दिया । इसी तरह भिलाई में भी केडिया ने भी किया । वहाँ के सिम्पलैक्स एसीसी कईयों के साथ में हुआ तो आप लोगों ने जब मुक्ति मोर्चा ज्वाईन किया उस वक्त आपको यह भी दिख रहा था कि जिन लोगों ने यूनियन की तरफ जाने की कोशिश की उनको बाहर कर दिया फिर भी आप गये ।

Ans- क्योकि वह एक न्याय की लडाई लड रहे थे कोई गैर कानूनी या गलत काम नही कर रहे थे ।

Q- मगर नौकरी तो खोने का डर था

Ans- खोने का डर था वह अलग बात है नौकरी करना और इस ढंग से लडाई करना अलग बात है । जेसे हम पहले सुनते थे और ट्रेड यूनियन की बात तो वह लोग तो सिर्फ महीने में चन्दा लेने आते थे और फिर चले जाते थे । इस तरह से तो हमारा सगंठन बिल्कुल अलग था

Q- इससे पहले आप किसी ट्रेड यूनियन के मैम्बर बने थे

Ans- नही लेकिन जानता था जैसे बहुत कम्पनियों में चन्दा लेने आते थे ।

Q- ये जो आन्दोलन है इसमें मजदूर आन्दोलन के अलावा और कोई चीज आपको नजर आई

Ans- जी हाँ इसके जीवन की जो मूलभूत समस्याए है जेसे शिक्षा है स्वास्थ्य है इस पर हम लोग देखो है कि दल्ली राजहरा का अस्पताल देखो है । शिक्षा के लिए स्कूल देखो है हमारी केवल ट्रेड यूनियन की लडाई नही है हमारी पूरे जीवन की लडाई है हमें अपने जीवन के लिए लडना है । अन्याय के खिलाफ हमको लडना है तो इसमें कोई दिक्कत ही नही है लडने की ।

Q- आप इसमें खास भूमिका किस क्षेत्र में निभाई है

Ans- इसमें शुरू में मै आफिस में था उसके बाद हमने १ अगस्त १९९६ को शहीद नगर में स्कूल । हमने सोचा और संगठन के विचार भी थे कि हमारे बच्चें स्कूल कहाँ जायेगें । उसके बाद हमने स्कूल की नीव डाली १ अगस्त १९९६ को और १८ अगस्त १९९६ को हमारा स्कूल शुरू हो गया । १८ अगस्त को पढाई शुरू हो गया केवल १८ दिन के अन्दर स्कूल तैयार हो गया और क्लास लगाना शुरू हो गया था

Q- पढाते कौन है ।

Ans- शुरू में तो हलधर जी वगैरा पढा रहे थे उसके बाद मेरे को आफिस से निपटने के बाद यहाँ पर मुझें जिम्मेदारी दी गयी । दो साल बाद १९९८ में ।

Q- कितने बच्चें है स्कूल में

Ans- स्कूल में अभी २५० के आस पास बच्चे है ।

Q- दो सिफट में चलता है ।

Ans- जी हाँ

Q- क्या क्या क्लास चलती है उसमें ।

Ans- शुरू में ७.३० बजे से लेकर के ११ बजे तक बाल बाडी से लेकर दूसरी तक ३ कक्षाएं उसके बाद ११ बजे से लेकर के ४.३० बजे ३,४,५ तीन क्लास

Q- इसमें फीस लेते है जो बच्चें आते है ।

Ans- नही यहाँ पर बिल्कुल फीस नही लेते है । बिल्कुल निःशुल्क शिक्षा है ।

Q- आपका स्कूल में कुछ तो खर्च होता होगा।

Ans- हाँ खर्चा तो होता है और अपने मजदूर साथी मिलजुल कर बॉट लेते हे ।

Q- और पढाने के लिए कौन आता है ।

Ans- पढाने के लिए हमारी ही साथी के परिवार आते है । महिला लोग वह हमारे साथी के बीच के है ।

Q- लडका लडकी दोनों पढ रहे है ।

Ans- जी हाँ

Q- तो इसमें जो यह ५वी के बोर्ड की परिक्षाए होती है तो उसके लिए स्कूल के लिए कोई रकेगनेशन करना पडता है । कानून राज्य की तरफ से

Ans- जी हाँ उसके लिए १० हजार की एफडी करनी पडती है । उसके बाद ५वी बोर्ड की मान्यता मिल जाती है ।

Q- आपकों मिला हुआ है

Ans- जी हाँ हमें मान्यता मिली हुई है ।

Q- रिजल्ट कैसे रहता है आपके स्कूल में

Ans- रिजल्ट हमारे स्कूल का सबसे अच्छा रहता है । हमारे स्कूल का रिजल्ट ६०-६५ प्रतिशत सबसे अच्छा रहता है ।

Q- यहाँ से पास होने के बाद क्या ज्यादा बच्चें आगें स्कूल में पढने जाते कि कईयों को छोडना पडता है ।

Ans- नही पाचवी पास करने के बाद सभी बच्चें पढने जाते है लडकिया भी जाती है और लडके दोनों जाते है ।

Q- ऐसा तो नही कि खर्चे की वजह से वहार की कही स्कूल बच्चें छोड रहे है ।

Ans- नही अभी तो ऐसी दिक्कत नही आयी है । लेकिन अभी यहाँ बीर गांव में बीएसई का जो स्कूल ला दिये है ६ से लेकर के उसमें बहुत बच्चों को पढना बहुत कोस्टली हो गया है । हो सकता कारण हो सकता । दिक्कत हो जाये और वह लोग आठवी तक भी नही पढ पायें ।

Q- यहाँ के लोग ये तो नही सोचते कि ये तो मुफ्त स्कूल है इसकी पढाई अच्छी नही है जो मजूदर साथी अपील कर सकता वह वाहर तो नही भेजता

Ans- नही नही ऐसा बिल्कुल नही है । हालांकि सोचते है कि जब हम फीस देगें तभी पढाई ठीक होगा लेकिन यहाँ पर ऐसी बात नही है । यहाँ पर सब जानते है कि शहीद स्कूल में पढाई ठीक होता

है । यहाँ तो ठेकेदार के बच्चें लोग पढते है । जो बाहर से आते है किसी ठेकेदार का दुकानदार का सब यहाँ पढने आते है ।

Q- क्या उनसे पैसे लेते हो

Ans- नही नही किसी से पैसे नही लेते सभी बच्चों को हम बराबर मानते है ।

Q- ये बताईयें कि रगुलर पढाई तो करानी है । क्योकि ५ वी की परिक्षा बच्चें ने पास करनी है । मुक्ति मोर्चा का स्कूल है ये तो क्या कोई अलग सोच भी बच्चों में दी जा रही है । कि सिर्फ रगुलर पढाई चलती है ।

Ans- नही जो अपनी सगंठन की सोच है विचार है वह बच्चों में ज्यादा से ज्यादा बताने की कोशिश हम लोग करते है । कोर्स तो वह यानि की गर्वन्मैन्ट का ही कोर्स है । लेकिन उसके साथ साथ अपने जो सिद्धान्त है कि किस तरह से हमारी लडाई जारी है हमारे साथी लोग हडताल पर बैठें है मजदूर की कैसे रोजी काटा जाता है । सरकार की क्या नीति है । कैसी नीति है ये सब हम बच्चों से बात करके उनको बताते है । प्रार्थना शुरू से ही शहीदों के विचार से चल रही है । यहाँ जो शहीद हुए है भिलाई गोली काण्ड में शहीद हुए है । शहीद नियोगी जी है शहीद वीर नारायाण सिंह जी के सिद्धान्तों को लेकर हम चल रहे है । यानि कि सबको शिक्षा होनी चाहिए अधिक से अधिकतर परिवार शिक्षित होना चाहिए इसलिए हमने स्कूल का नाम भी शहीद स्कूल रखा है ।

Q- आपका अपना परिवार कहाँ रहता है ।

Ans- यही ही रहता है ।

Q- आपकी शादी हो गयी ।

Ans- जी हाँ

Q- बच्चे है ।

Ans- जी हाँ

Q- कहाँ पढते है और कौन सी क्लास में पढते है ।

Ans- यही पढतें है शहीद स्कूल में एक तीसरी क्लास में है और एक बालवाडी में है । लडका ७ साल का है और लडकी तीन साल की है ।

Q- घर में कोई झझंट नही कि क्या काम कर रहे है । यही पर लगें हुए है ।

Ans- क्योंकि मेरा परिवार हम सगंठन लोगों की लडाई को रोज देख रहा है कि यह आन्दोलन है कितना उत्तम है इस तरह की आप कमा नही रहे । आपको पैसा नही मिलता है कभी भी ऐसा नही हुआ ।

Q- आपकी पत्नि पढी लिखी है ।

Ans- जी हाँ आठवी तक पढी है ।

Q- वह कुछ मदद कर पाती है आपके काम में ।

Ans- नही मदद तो नही कर पाती

ये शहीदों हमारा नमन है नमन है ।

हम तुम्हारे राहों में चलेगें कसम है ।

हम चलेगें सब चलेगें तुम्हारे ही राहो में ।

ऐसे ही शक्ति दो बार बार नमन है

तुम्हारे उस खून की कसम आज खाते है
तेरे ही ताकत मे तूफान से टकराते है ।
इन्कलाब जिन्दाबाद, जिन्दाबाद, जिन्दाबाद
यही स्वर गुजेगा विश्व और गगन में ।
ये शहीदों हमारा नमन है नमन है ।
आसू भरा नमन से बार बार नमन है
ना चलेगी गोलिया ना जलेगी डोलियाँ
नया नया फूल खिलेगा ये ऐसा चमन है ।
ये शहीदों शक्ति दो बार बार नमन है ।
ये शहीदों हमारा नमन है नमन है ।
आसू भरा नयन से बार बार नमन है ।